नेहरू के सांविधानिक विचार में जनवाद की धारणा

अनिता पासी

जनवाद पर नेहरू के विचारों के मजबूत पक्ष पश्चिमी बुर्जुआ राजनीतिक प्रणाली की उनकी आलोचना से अविच्छेद्यतः जुडे हुए थे। तीसरे और चौथे दशक में यह आलोचना विशेषतः तीव्र थी। उन दशकों में नेहरू ने बुर्जुआ राजनीतिक प्रणाली के जो मूल्यांकन दिये, उन्हें यहां उद्धत करने की आवश्यकता नहीं हे, क्योंकि वह अंशतः राज्य तथा पूंजीवाद के स्वरूप पर उनके विचारों की व्याख्या के संबंध में किया गया था। हम यहां 1919 में की गयी सिर्फ एक आलोचना को उद्धत करेंगे। यह बरट्रन्ड रसल की पुस्तक स्वाधीनता के मार्ग की नेहरू की अधूरी समीक्षा में बुर्जुआ जनवा का घातक चरित्रचित्रण है ''आज के जनतंत्र ने जो पूंजी, संपत्ति, सैन्यवाद और अधिक बढ़ी हुई नौकरशाही के अपवित्र गंठबंधन के तहत पूंजीवादी प्रेस की सहायता से चलाया जाता है, एक भ्रम और फंदा सिद्ध हुआ है।